अमृत विचार 10/09/2026

रुक-रुककर बारिश और अधिक नमी से फसल हो सकती प्रभावित

बारिश के बदलते पैटर्न से सब्जी का आकार हो सकता छोट

कार्यायल संवाददाता, कानपुर

- कानपुर मंडल में बारिश का मिजाज बदला रहा
- पैची रेन और बीच-बीच में तेज धूप से परेशानी

अमृत विचार। कानपुर मंडल में इन दिनों मौसम का मिजाज बदला हुआ है। पैची रेन जैसे बदले हुए पैटर्न को विशेषज्ञ सब्जी व फल के नकारात्मक मान रहे हैं। उनका मानना है कि इस बदले हुए पैटर्न से सब्जी व फलों पर रोग की आशंका बढ़ गई है, जिससे उनका आकार औसत से छोटा हो सकता है।

फसल विशेषज्ञों ने बताया कि इस समय बारिश के एक-दो दिन होने के बाद मौसम खुल जाता है और फिर अचानक बारिश शुरू हो जाती है। कई बार लगातार दो-तीन दिन तक वर्षा होती रहती है। बारिश के बीच मौसम साफ होने के बावजूद वातावरण में नमी और उमस अधिक बनी रहती है। ऐसी परिस्थितियों में खेत की मिट्टी में लगातार नमी, पत्तियों पर लंबे समय तक गीलापन और कम वायु संचार के कारण सब्जी फसलों में फफूंद एवं जीवाणुजनित रोग, जड़ एवं तना सड़न तथा रस चूसक कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। विशेषज्ञों ने बताया कि खेत में पानी खड़ा रहने से जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती और जड़ सड़न, पौधों के मुरझाने तथा पोषक तत्वों के अवशोषण में कमी की समस्या बढ़ती है। जिससे सब्जी व फलों के आकार में प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में खेत की नालियों को साफ रखने और अतिरिक्त पानी को तुरंत बाहर निकाना चाहिए। संभव हो तो सब्जियों को उठी हुई क्यारियों अथवा मेड़ों पर लगाएं।

फसलों का ध्यान रखें किसान।

कमी की पहचान करें

- लगातार बारिश के बाद नई पत्तियों में पीलापन, पत्तियों का छोटा रहना अथवा वृद्धि रुकना दिखाई दे तो इसे केवल नाइट्रोजन की कमी न मानें। जिंक, आयरन, बोरॉन एवं मैग्नीशियम की कमी भी हो सकती है। बिना लक्षण अथवा मृदा परीक्षण के अत्यधिक सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करने के बजाय कमी की सही पहचान कर फसल-विशिष्ट अनुशंसा के अनुसार पर्णीय पोषण करें।

-डॉ राजीव, सीएसए कृषि विश्वविद्यालय

रोग शुरू होते ही करें बचाव के उपाय

- इस तरह के मौसम से अधिक आर्द्रता और पत्तियों पर लंबे समय तक नमी रहने से टमाटर एवं मिर्च में झुलसा, पत्ती धब्बा और फल सड़न, बैंगन में फोमोप्सिस, फल सड़न तथा तना एवं फल छेदक से संबंधित क्षति, जबकि लौकी, खीरा, कद्दू, करेला एवं तोरई जैसी कद्दूवर्गीय सब्जियों में डाउनी मिल्ड्यू, पत्ती धब्बा एवं फल सड़न की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते ही संक्रमित पत्तियों एवं फलों को खेत से निकालकर नष्ट करना चाहिए। फसल को अनावश्यक रूप से घना न रखें ताकि हवा का आवागमन बना रहे। रोग की शुरुआत में, मौसम साफ रहने पर, फसल के अनुसार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड, मैनकोजेब या मेटालेक्सिल, मैनकोजेब जैसे फफूंदनाशकों का प्रयोग संबंधित फसल पर लेबल में अनुमोदित मात्रा के अनुसार किया जा सकता है।

कीटों की भी नियमित निगरानी करें

- बारिश के बीच मौसम खुलने पर सफेद मक्खी, माहू, थ्रिप्स, जैसिड तथा फल एवं तना छेदक जैसे कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। टमाटर, बैंगन और मिर्च में पत्तियों की निचली सतह तथा नई बढ़वार की नियमित जांच करें। फल एवं तना छेदक से प्रभावित टहनियों और फलों को तोड़कर नष्ट करें तथा आवश्यकता होने पर फेरोमोन ट्रैप लगाएं। कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी की निगरानी के लिए आकर्षक ट्रैप उपयोगी हैं। रस चूसक कीटों की शुरुआती अवस्था में नीम आधारित उत्पादों का प्रयोग किया जा सकता है। अधिक प्रकोप होने पर केवल संबंधित फसल में अनुशंसित एवं लेबल-स्वीकृत कीटनाशी का ही प्रयोग करें।